The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol 1, Issue 1 - 2017

पर्यटन का सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू (चुनौतियां व सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव)

शालिनी झा*

शोध सारांश

सामाजिक पर्यटन के एक रूप में व्यक्ति अपने ही समाज के विभिन्न वर्गों से परिचित होता है। सांस्कृतिक पर्यटन इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि "यह सांस्कृतिक आकर्षण में लोगों की ऐसी गतिशीलता है जो उन्हें उनके सामान्य निवास स्थल से अन्य स्थल पर ले जाती है, जिससे वे नवीन जानकारी और अनुभव एकत्र कर अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।" यदि भिन्न–भिन्न वर्ग जाति व पहचान वाले परिवार एक साथ पर्यटन पर निकलें तो यह उनके बीच जमे सामाजिक अंतराल को कम करने में सहायक सिद्ध होता है। सामाजिक सांस्कृतिक पर्यटन 'सामाजिक समावेशन' या 'सोशल इक्लूजन' का प्रभावशाली उपाय है।

कुंजीशब्द: सामाजिक सांस्कृतिक पर्यटन, यात्राऐं, सामाजिक अंतराल।

सामाजिक पर्यटन का एक रूप यह हैं कि किसी नये समाज को जानने समझने की जिज्ञासा होती हैं। यह देखने का प्रयास होता हैं कि दूसरे समाजों ने अपनी सामुदायिक आवश्यकता पूरी करने के लिए जो सामाजिक ढांचे खड़े किये हैं वे अन्य सामाजिक ढाचे से कितने अलग हैं? साथ ही, इस प्रक्रिया मे यह तुलना भी होती चलती है कि एक सामाजिक व्यवस्था दूसरी से कितनी अलग खड़ी है? तथा आदान–प्रदान द्वारा एक दूसरे से क्या सीख ले सकते हैं?

कभी–कभी सामाजिक सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यटन कम शोध और पर्यटक एक शोधार्थी जैसा होता है। इतिहास में विदेशों से भारत आने वाले यात्री फाहियान, ह्वेन सांग, अलबरूनी, इब्नबतूता और मार्को पोलो आदि किन्हीं अर्थों में सामाजिक पर्यटन हेतु ही आये थे। रार्बट मैलिनोवस्की व रेडक्लिफ ब्राऊन जैसे मानवशास्त्रीयों के जनजातीय क्षेत्रों के केस स्टडी समाजशास्त्रीय दृष्टि से लोगों में सामाजिक पर्यटन के प्रति रूचि पैदा करते हैं। भारत में आन्द्रेबेतई ने भी इस संदर्भ में कार्य किया है। समाजशास्त्री वर्तमान में ऐसे प्रयोगधर्मी नवीन रोचक वर्णन कर रहे हैं, जो अध्ययन करने वाले में जिज्ञासा का बीजारोपण करता है। ये अनुसंधानकर्त्ता एक अर्थ में सामाजिक पर्यटन का कार्य कर रहे हैं।

सामान्य पर्यटकों का ध्यान भी इस ओर बढ़ रहा है। विशेषतः पश्चिमी राजस्थान, गुजरात का कच्छ प्रदेश, पूर्वांचल के पहाड़ी व वनस्थल, अंडमान निकोबार आदि ऐसे ही स्थल हैं जहां अस्थायी रूप से एक निश्चित समय के लिए लोग यात्राओं के लिए जाते हैं तथा वहां की वेशभूषा, खानपान, संस्कृति, सामाजिक, उत्सवों में शामिल होना पसंद करते हैं।

*शोधार्थी, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। **Correspondence E-mail Id:** editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

सामाजिक सांस्कृतिक पर्यटन में, एक नई संकल्पना प्रचलन में आ रही है जहां कुछ लोग मेजबान के रूप में अपना पंजीकरण कराते हैं, जिसमें वे विदेशी पर्यटको को अपने साथ अपने घर पर ठहराते हैं। परम्परागत होटल में ठहरने की परम्परा से अलग इन मेजबानों के साथ स्थानीय समाज को नजदीक से देखने समझने का अवसर मिलता है। पर्यटक उस घर के साधारण सदस्यों की तरह रहते हैं, यह स्थानीय संस्कृति को निकट से देखने का अवसर देता है। भारत मे भी यह विकल्प मौजूद है। अनेक पर्यटनकेन्द्रों में ऐसे पंजीकृत मेजबान विदेशी पर्यटको को अपने साथ अपने घर पर ठहराते हैं व सामाजिक सांस्कृतिक पर्यटन को विस्तार देते हैं।

चुनौतियां व सावधानी

पहली चुनौती यह है कि कई पर्यटक दूसरे समाज से संवाद करते समय, स्थानीय समुदाय की स्वतन्त्रता का उल्लंघन करते हैं, विशेषत: जनजातिय प्रदेशों में बच्चों व युवाओं को प्रलोभन देकर नृत्य या अशोभनीय व्यवहार हेतु प्रेरित करना, उनकी तस्वीरों का अवांछित प्रयोग करना आदि। जो पर्यटक व उस समुदाय व राष्ट्र के लिए असम्मानजनक स्थिति खड़ी कर देता है। विशेषत: जनजातिय व सामाजिक आर्थिक पिछड़े प्रदेशो में ऐसा होता है। धीरे–धीरे सामाजिक पर्यटन के प्रसिद्ध स्थलों पर कानूनी, अनुशासन सबधी सख्ती के बाद पर्यटको को सख्त हिदायते दी गई हैं। जिससे स्थानीय लोग व पर्यटन दोनों के लिए स्वतंत्र संवाद में अवसर सीमित या खत्म हो गये हैं। जिसके लिए जिम्मेदारी भी उन्हीं लोगों की हैं जिन्होंने सामाजिक पर्यटन का शोक तो पाला किन्तु अपेक्षित अनुशासन का निर्वाह नहीं किया।

दूसरी चुनौती यह है कि पर्यटकों को समझना होगा कि दूसरे समाज की संस्कृति को देखने समझने का दृष्टिकोण क्या हो ?

पहला दृष्टिकोण 'नृजातियकेन्द्रीय प्रवृत्ति या 'ऐथनोसेंट्रिक' दृष्टि में लोग अपनी संस्कृति के मानदण्डों को आदर्श मानते हुए दूसरी संस्कृति का मूल्यांकन करते हैं व अवांछित व अनावश्यक तुलना द्वारा यह देखते हैं कि उनकी संस्कृति अपनी संस्कृति से कितनी समान है।

दूसरा दृष्टिकोण 'जीनोसेंट्रिक' है जिसमे दूसरे की संस्कृति को अति आदर्श और अंधभक्ति से देखते हुए अपनी स्वयं की संस्कृति का पुर्नमूल्यांकन करने लगते हैं तथा दूसरे की तुलना में स्वयं को पिछड़ा हुआ मानते हैं।

तीसरा दृष्टिकोण जो सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है, जिसमें प्रत्येक संस्कृति को उसके अपने सांस्कृतिक सामाजिक संदर्भो मे देखा जाता है। यह सांस्कृतिक सापेक्षवाद या 'कल्चरल रिलेटिविज्म' कहा जाता है अर्थात प्रत्येक संस्कृति अपनी परिस्थिति व इतिहास से प्रभावित होती हैं तथा दो भिन्न संस्कृतियों की अवस्वस्थ तुलना अनुचित है। प्रत्येक संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हुए जिज्ञासा और सम्मान के सथ देखना चाहिए। किसी भी संस्कृति को अजीब न मानते हुए सहजता से देखना चाहिए क्योंकि सभी संस्कृतियां एक दूसरे के लिए अजीब हैं। वर्तमान वैश्वीकरण की प्रक्रिया में अपेक्षित है कि नवीन पीढ़ियों को 'कोस्मोपोलिटन' मूल्यों से परिचित कराते हुए वैश्विक सामाजिक पर्यटन की पूर्व तैयारी करनी चाहिए।

सामाजिक पर्यटन का एक ओर पहलू

कहते हैं कि यात्राऐं सिखाती हैं, दिमाग की खिड़कियां खोलती है, ज्ञान के नये द्वार खोलती हैं, बदलाव का माध्यम होती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक यात्राओं की श्रेणी में भारत में ऐसी यात्राओं की लम्बी परम्परा रही है। एक छोर पर यदि बुद्ध दिखते हैं तो

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

दूसरी और महात्मा गांधी जिन्होंने यात्राओं के जरिये, धर्म और दर्शन को, मानवीय दुखों और सामाजिक असमानताओं को दूर करने का माध्यम बनाया। अशोक की यात्राएँ जनता से सामाजिक सम्पर्क, शासन के मानवीय स्वरूप को समझने का तरीका था तो शंकराचार्य व बुद्ध की यात्राएँ धार्मिक सम्प्रदायों के बीच दूरी पाटने व उदार धर्म व दर्शन के प्रचार का तरीका था। विवेकानन्द जैसे तेजस्वी युवा ने देश जगाने के लिए यात्राएँ की, वे उत्तर भारत के तमाम शहरों, पहाड़ी, इलाकों से राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण तक की उनकी यात्राओं से देश को जगा रहे थे, साथ ही देश को समझ भी रहे थे।

स्वतन्त्रता संघर्ष की लम्बी यात्रा में राजाराम मोहन राय, टैगोर, बाल गंगाधर–जैसे अनेक नाम हैं। राहुल सांस्कृत्यायन तो ज्ञान और दुर्लभ ग्रन्थों की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ों और नदियों के बीच भटके। सामाजिक क्रान्ति की दिशा में उनका योगदान भी महत्वपूर्ण है। यात्राएँ जीवन को गतिशीलता से जोड़ती है। गांधीजी ने अपनी यात्राओं के द्वारा जन शक्ति और कमजोरी की पड़ताल की। उनकी यात्राएँ राष्ट्रीय आजादी आन्दोलन का सूत्र बनी। वर्तमान में सुविधाओं के लिए बाहर के देशों में जाने के मौके ज्यादा बढ़े हैं तो विदेशी यात्रा में व पर्यटन से सीखने को भी ज्यादा मिला रहा है। जिसका आधार, हमारी सोच, जीवन शैली, संस्कृति और समाज पर दिखने लगा है। यात्राएँ विस्तार देती हैं, सिखाती भी हैं। सुखद व सकारात्मक बात है देश के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास को यात्राओं ने गढ़ा है और ये प्रक्रिया जारी है।

सामाजिक पर्यावरण पर पर्यटन के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव

पर्यटन मेजबान समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता हैं। पर्यटन अर्न्तराष्ट्रीय शांति, सद्भाव और परस्पर समझ बढ़ जाती है तो दूसरी और विशिष्ट संस्कृति को भ्रष्ट भी बना सकता है। लोगों की निजता, प्रतिष्ठा व मौलिकता को भंग करता है।

सकारात्मक पक्ष

पर्यटन परस्पर सकारात्मक अभिवृति का विकास करता हैं। आपसी संस्कृति व रीति–रिवाज को सिखाता हैं। रूढ़िवादी नकारात्मक दृष्टिकोण को घटाता है, मैत्री बढ़ता है। परस्पर संस्कृतियों के प्रति गर्व, सराहना, समझ, आदर व सहिष्णुता को बढ़ाता है। मेजबान व पर्यटक के परस्पर आत्म–सम्मान/आदर को बढ़ाता है। आपसी अंतःक्रिया व सामाजिक सम्पर्क से पर्यटक व स्थानीय लोगों के मध्य आपसी सराहना, समझ, सहिष्णुता, जागरूकता, सीख, पारिवारिक आदर संबंध और रूचि/पसंदगी बढ़ती है। स्थानीय लोग बाह्य दुनिया से परिचित होते हैं, जबकि पर्यटक एक भिन्न और विशिष्ट संस्कृति को जानता है। स्थानीय समुदाय पर्यटन द्वारा सामाजिक, आधारभूत संरचना जैसे– विद्यालय, पुस्तकालय, स्वास्थ सुविधा संस्थान, इंटरनेट केफे व ऐसी अनेक सुविधाओं में सुधार का लाभ उठाता है। स्थानीय लोगों की लोक संस्कृति, परम्परा व हस्तकलाओं को प्रोत्साहन व संरक्षण के अवसर मिलते हैं। दूसरी ओर पर्यटन से तनाव, संदेह व शत्रुता भी बढ़ती है। पर्यटन सांस्कृतिक बदलाव भी लाता है। कभी कभी संसाधनों का अतिरिक्त विकास नकारात्मक परिवर्तन लाता है, जैसे अतिवृद्धि, आत्मसात्मीकरण, संघर्ष, कृत्रिम पुर्ननिर्माण। पर्यटकों के सामने अपनी संस्कृति को प्रस्तुत करने के दौरान उसका सरक्षण होता है तो दूसरी और यह नष्ट भी हो सकती है। अतः पर्यटन का उद्देश्य आर्थिक लाभ बढ़ाने के साथ स्थानीय परम्पराओं व संस्कृति के प्रति आदर बढ़ाना भी है। पर्यटन से होने वाले पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय नकारात्मक बदलाव पर भी नियंत्रण व रोक

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

रखनी होगी। सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यटन का ही एक अन्य भाग है–जो किसी देश, किसी प्रदेश की संस्कृति या निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के लोगों की जीवन शैली, इन लोगों के इतिहास से संबंधित हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में ग्रामीण क्षेत्रों के परम्परा, विशिष्ट सांस्कृतिक रागुदाय के उत्राव, कर्मकाण्ड, रीति रिवाज, मूल्य, जीवन शैली, रचनात्मक गतिविधियां शामिल हैं। माना जाता है कि इस प्रकार का पर्यटन कुछ उच्च स्तरीय होता है। पर्यटन का यह प्रकार विश्वभर में प्रचलित हैं और रिपोर्टस में माना गया है कि विश्वभर में क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से सांस्कृतिक पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पर्यटन की विभिन्न समस्याओं के बावजूद नीति निर्माण, पर्यटन बोर्डस, पर्यटन क्षेत्र के प्रबंधक विश्वभर में सांस्कृतिक पर्यटन को पर्यटन विकास के एक उत्पादक स्त्रोत के रूप में देखते हैं। यह एक सामान्य धारणा है कि सांस्कृतिक पर्यटन एक श्रेष्ठ पर्यटन है जो अधिक व्यय करने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है, ये पारिस्थितिकी व पर्यावरण या स्थानीय संस्कृति को न्यूनतम् नुकसान पहुंचाते है तथा स्थानीय संस्कृति को आर्थिक लाभ पहुंचाते हुए सहयोग भी करते हैं। दूसरी ओर कुछ लोगों की धारणा यह भी है कि सांस्कृतिक पर्यटकों को स्थानीय प्रवेश देने से सांस्कृतिक पर्यावरण में अनावश्यक संवेदनशील दखल बढ़ जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाल, राजेन्द्र (2010) 'टूरिज्म एण्ड स्पिरिट आफ इंटरप्रिनरशिप' मोहित प्रकाशन, नई दिल्ली।

[2]. दिव्यकीर्ति, विकास (2015). पर्यटन क्षेत्र से जुडे सामाजिक सांस्कृतिक मुद्दे', योजना, अंक–5, मई 2015।

[3]. Naik, Ashish Arkush and Jangir, Sushil Kumar (2013) 'A Social Aspect of Tourism Development in India'. International Journal of Advanced Research in Computer Science and Software Engineering, Vol 3, Issue 12, Dcmember 2013.

[4]. Nagarjun, L.G. and B. Chandrashekhara (2014), 'Rural Tourism and Rural Development in India', International Journal of Interdisciplinary and Mulitidisciplinary studies (IJIMS) 2014, Vol 1, No. 6.

[5]. Samson, Ejay (2015) 'Socio Cultural Impacts of Tourism', Published in Travel, Jan 21, 2015.

[6]. श्रीवास्तव, संजय (2015). यात्राऐं जिन्होंने भारत को बदला' योजना, अंक–5, मई 2015।

[7]. U.K. Essays (2015), 'The Socio Cultural Impact of Tourism: Tourisim Essay'. Published 23rd March, 2015.

[8]. Wikipedia the Encyclopedia Cultural Toursim.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.